यों चौदह वर्ष नेष्टा बंध, बचन ग्रहे सब सार ।
या उपरान्त कृपा भई, ताको कहों विचार ॥३४॥

इस प्रकार सच्ची लगन से नेष्टाबन्ध हो कर श्री मद् भागवत के सब सार का रस चौदह वर्ष तक पान किया । इसके पश्चात् पारब्रह्म अक्षरातीत जो धाम के धनी हैं अपनी अंगना श्यामा महारानी पर किस प्रकार कृपा करके दर्शन देते हैं । अब उस विषय को कहता हूं । हे प्यारे सुन्दरसाथ जी सुनकर विचार कीजिए ।

महामति कहें ए साथ जी, ए नौतनपुरी की हकीकत ।
और भी आगे की कहों, भई जो बीतक इत ॥३५॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! यह आपको श्री देवचन्द्र जी के चौदह वर्ष नेष्ठा बन्ध भागवत नौतनपुरी में सुनने का प्रसंग कहा है । अब आगे और जो असल हकीकत का प्रसंग है । वह कहता हूं ।

(प्रकरण ५ चौपाई २८८)

दरसन

अब कहों श्री देवचन्द्र जी की, जो बात मूल बुजरक ।
जो मेहर सैंयन पर, करी सुभानुल हक ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! अब श्री देवचन्द्र जी के जीवन काल में जो सबसे बड़ी महत्वपूर्ण घटना घटी वह सुनो । और वह मेहर अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म ने अपनी आत्माओं पर की है ।

चौदह वर्ष नेष्टाबन्ध, सुनयो श्री भागवत जब ।
आवेस लीला भई, सब नजरों आया तब ॥२॥

जब चौदह वर्ष नेष्टाबन्ध भागवत सुनते बीत गये तब अक्षरातीत पारब्रह्म ने अपने आवेश स्वरूप से दर्शन दे कर जागृत बुध पराशक्ति का वह अनुपम ज्ञान देवचन्द्र जी को दिया जो आज दिन तक इस संसार में नहीं था ।

कछू कसनी भई आकार को, इन समें इस ठौर ।
पर नजरों कछु न आइया, दज्जाल लड़ने लगा जोर ॥३॥

इस घटना से पूर्व देवचन्द्र जी को कुछ शरीरिक कसनी करनी पड़ी पर उन्होंने शरीरिक कसौटियों को कभी कुछ नही समझा और दज्जाल ने अनेकों रूकावटें डाली ।

Nijanand App

इहां ज्वर आवने लगा, एक लंघन भई दोय ।
श्रवना भंग न करें, कान बांध के सुनने जायें सोय ॥४॥

श्री देवचन्द्र जी को बुखार आने लगा । जिस कारण से भोजन करना बंद हो गया । एक दो दिन बीत गए पर कान और सिर पर कपड़ा बांधकर वह कथा सुनने अवश्य जाते थे ।

तीन चार पांच भई, ज्वर न छूटे जब ।
ए तो जाय सुनने, ए सेवा न छूटे तब ॥५॥

चार-पांच दिन इसी प्रकार बीत गए । बुखार नही उतरा तो भी श्री मद्भागवत सुनने जाते रहे क्योंकि भागवत सुनना ही आत्म कल्याण के लक्ष्य का साधन बना लिया था ।

यों करते दस बारह लों, लांघन भई जोर ।
ए भागवत सुनन का, कछु न छूटे टौर ॥६॥

इस प्रकार जब दस-बारह दिन बिना भोजन के व्यतीत हो गए तो भी भागवत नेष्टाबंध सुनते रहे ।

मत्तू मेहता तबीब को, बुलाय दिखाया हाथ ।
तब तबीब औषध दिया, जतन करो इन साथ ॥७॥

तब पिता श्री मत्तू मेहता ने वैद्य को बुलाकर बुखार उतारने की औषधि दिलाई और वैद्य ने कुछ परहेज करने को कहा ।

वाउ लगने ना देवो, जतन करो इन पर ।
तब कुंअर बाई ने कहा, ए अबहीं जाये भागवत पर ॥८॥

दवाई देने के बाद इन्हें हवा नही लगनी चाहिए । यही यत्न करना है । तब माता श्री कुंवर बाई जी ने कहा वैद्य जी ये तो अभी ही भागवत सुनने जाएंगे ।

तब वैद औषद को, इनसे लई फेर ।
इन वाउ से सनपात होय, मैं न आऊं दूजी बेर ॥९॥

तब वैद्य ने ऐसा सुनकर अपनी दी हुई दवाई वापस ले ली और कहा यदि मेरी दवाई देने के बाद हवा लग गई तो मृत्यु का डर है मैं ऐसे रोगी को दवाई ही नही देता और मुझे दोबारा नही बुलाना ।

तब मत्तू मेहता ने कहया, करेंगे हम जतन ।
हम क्यों जाने देवेंगे, रखना है याकों तन ॥१०॥

तब पिता श्री मत्तू मेहता जी ने कहा वैद्य जी किसी प्रकार की चिंता न करिए जैसे आप कह रहे हैं। हम वैसा ही करेंगे । हमारी एक ही सन्तान है इसे हमें मरने नही देना ।

Nijanand App

तब श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, मैं न रहों क्योंए कर ।
धर्म राखे ते देह है, जवाब देत यों कर ॥११॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा- हे पिता जी ! मैं किसी प्रकार से रूकने वाला नही हूं। सत्य धर्म का पालन करने के लिए यह देह मिली है। उस मार्ग पर चलते हुए मुझे देह की चिन्ता नही है।

वे जवाब यों देवहीं, देह राखे होय धरम ।
इनकी मत माया मिने, आधीन रहे करम ॥१२॥

तब पिता श्री ने कहा कि देह रहेगी तो धर्म का पालन होगा या बिना देह के ही तुम धर्म का पालन कर लोगे। उनकी सांसारिक बुद्धि होने के कारण से वह कर्म को महान मानते थे।

वैद तो तब उठ गया, काढ़ा पिलाया जब ।
बखत हुआ सुनन का, कान मूंद लाठी ले चले तब ॥१३॥

वैद्य जी जब चले गये तो माता कुंवर बाई जी ने काढ़ा उबाल कर छान कर पिलाया तो इतने में भागवत सुनने जाने का समय हो गया। तब देवचन्द्र जी वैद्य के कहे अनुसार सिर, कान, गर्दन सब कपड़े से बांध कर लाठी ले कर चलने को तैयार हो गये।

मत्तू मेहता कुंवर बाई, बहुतक रहे बरज ।
ए कैसेहु माने नही, आतम साधन गरज ॥१४॥

माता-पिता ने हर प्रकार से बहुत समझाया और जाने से रोका, पर देवचन्द्र जी किसी प्रकार से रूकने वाले नही थे क्योंकि उनके जीवन का लक्ष्य आतम कल्याण बन चुका था।

तब घर में रूध किवाड़ दे, द्वार खड़ा मत्तू मेहता आप ।
श्री देवचन्द्र जी पुकारहीं, बड़ो दुख पायो ताप ॥१५॥

तब पिता श्री मत्तू मेहता ने जिस कमरे में देवचन्द्र जी थे उस कमरे को बन्द कर दिया और स्वंय बाहर खड़े हो गये। ऐसा व्यवहार देख कर देवचन्द्र जी अति क्रोधित होकर जोर-२ से पुकारने लगे, जिससे उनका मन बहुत दुःखी हुआ।

रे मूरखो मैं मरने का नही, मेरा देखोगे आकार ।
उत मेरी आतम जायगी, और नही विचार ॥१६॥

देवचन्द्र जी बोले पिता जी ! तुम लोग मूर्ख हो। मैं भागवत की चर्चा सुनने अवश्य जाऊंगा, यदि इस प्रकार रोकोगे तो मेरी आतमा चर्चा सुनने जायेगी और शरीर को मृतक अवस्था में देखोगे।

Nijanand App

ए क्योंए माने नही, तब गिरे पीछले पाय ।
खम्मा खम्मा माता कहे, गिरे भोम भमरी खाय ॥१७॥

देवचन्द्र जी की ऐसी दुःखी आवाज को सुन कर जब पिता जी ने किवाड़ नही खोला तो देवचन्द्र जी मूर्छित होकर गिर गये। ऐसी दशा को देख कर माता श्री कुंवरबाई ने कहा हाय ! यह क्या हो गया।

तब कुंवरबाई ने सोर करयो, कठिन कह खुलाए द्वार ।
आकार आंखें फिर गईं, कछु न आवे विचार ॥१८॥

तब कुंवरबाई ने क्रोधित होकर शोर मचाया और अपने पति को कठोर शब्द कहकर किवाड़ खुलवाया। तब पिता जी ने भी उनको ऐसी मूर्च्छित अवस्था में देखा तो हैरान हो गए। देवचन्द्र जी की आंखें मृतक के समान हुई देखकर उनकी सुध बुध ही गुम हो गई।

अहो श्री देवचन्द्र जी, यों पुकार सुनावें कान ।
ए कछु न सुनत, ना सके काहू पहिचान ॥१९॥

मत्तू मेहता जी ने तुरंत उनको गोद में लिया और कहा हे प्यारे देवचन्द्र ! तुम्हें क्या हो गया है पर देवचन्द्र जी तो मूर्च्छित अवस्था में थे, किसी को पहचानते नहीं थे।

तुम जाओ सुनने श्री भागवत, भट्ट के बुलौआ आय ।
तुम को कोई न रोकहीं, चलो पहुंचावें धाय ॥२०॥

तब मत्तू मेहता जी ने कहा कि हे देवचन्द्र जी। भट्ट जी ने तुमको बुलाने के लिए आदमी भेजा है। अब तुम्हें कोई नही रोकेगा, भागवत सुनने के लिए जाओ, कहो तो तुम्हें हम स्वयं छोड़ आते हैं।

एक आध घड़ी पीछे, कछुक भये सावचेत ।
तब उठ बैठे भये, मुख होय गया सुपेत ॥२१॥

थोड़े समय के पश्चात् जब देवचन्द्र जी होश में आ गये तो उठ कर बैठ तो गये थे पर मुख कमजोरी के कारण बिल्कुल सुपेत हो चुका था।

जाय श्रवण करो श्री भागवत, कोई न बरजे तुम ।
लाठी पकड़ ठाढ़े भये, कहो तो पहुंचावे हम ॥२२॥

तब माता-पिता जी ने कहा जाओ बेटा भागवत सुनने जाओ। अब तुम्हें कोई नही रोकेगा। तब देवचन्द्र जी लाठी के सहारे खड़े हो गये। तो पिता जी ने कहा कि कहो तो हम तुम्हें पहुंचा आएं।

Nijanand App

श्री देवचन्द्र जी बोले नही, चले स्याम जी मंदिर द्वार ।
आय बैठे सभा मिने, सुनत श्रवन उस्तवार ॥२३॥

देवचन्द्र जी कुछ बोले नही और चुपचाप श्याम जी के मंदिर की ओर चल दिए। सभा में जाकर अपने स्थान पर बैठ गये और चुस्त होकर भागवत सुनने लगे।

जब भागवत सुन के, फेर के आये घर ।
तबहीं चैन जो पाइया, ठाढ़ा न रहूया ज्वर ॥२४॥

भागवत सुनने तक के समय में जो गरम काढ़ा पी रखा था उसके द्वारा बुखार उतर गया। और बड़े आराम के साथ घर वापस आ गये।

फेर इहाँ से पथ लिया, होय चली फुरसद ।
दिन दिन चढ़ते गये, यही कसनी की हद ॥२५॥

फिर धीरे धीरे शरीर की शिथिलता भी दूर हो गई और स्वास्थ्य ठीक हो गया। यही कसनी की अन्तिम परीक्षा थी।

दिन दस पन्द्रह हुए, कथा सुनत है कान ।
तहां आय दीदार दिया, तुमको मेरी पहचान ॥२६॥

जब बुखार उतरने के बाद दस पन्द्रह दिन व्यतीत हो गये तो पारब्रह्म अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने आवेश स्वरूप से आ कर दर्शन दिया तो देवचन्द्र जी महाराज दर्शन कर अति प्रसन्न हो कर मग्न हो गये। तब उस स्वरूप ने यह कहा कि इतने प्यार से तुम मुझे देख रहे हो क्या तुमने मुझे पहचान लिया है।

वय किसोर अति सुन्दर, सरूप खेला जो वृन्दावन ।
देख श्री देवचन्द्र जी ने कहूया, जैसी गवाही दई मन ॥२७॥

जिस आवेश स्वरूप में श्री राज जी ने दर्शन दिया था। वह स्वरूप किशोर और अति सुन्दर था, वह वैसा ही था जैसा स्वरूप धारण करके उन्होंने वृन्दावन में रास लीला की थी। क्योंकि अब देवचन्द्र जी हर रोज बांके बिहारी की ही चितवनी करते थे तो उन्होंने मन में यही समझा कि मेरे प्रियतम बांके बिहारी ही हैं।

तुम हमारे खावन्द, एता जानत हैं हम ।
आप को पहिचानत हो, कौन कहां से आये तुम ॥२८॥

उसी अनुसार उत्तर दिया कि आप मेरे खावन्द हैं। तब उस स्वरूप ने कहा कि अपना घर कहां है। तो देवचन्द्र जी कुछ उत्तर ना दे सके। तब दूसरा प्रश्न किया क्या तुम अपने को पहचानते हो कि तुम कौन हो और कहां से आये हो ?

Nijanand App

तूं कौन आई इत क्यों कर, कहां है तेरा वतन ।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन ॥

(कलश - हि० प्रकरण १ चौपाई ६)

इतना हम जानत हैं, जो धनी हमारे तुम ।
कह्या तुम एता ही जानत, अब बतावें हम ॥२९॥

देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मैं इतना ही जानता हूं कि आप मेरे धनी हैं तब उस स्वरूप ने कहा- बस इतना ही जानते हो । अब हम आप को सब कुछ बताते हैं ।

नाम तुम्हारा बाई सुन्दर, खेले तुम ब्रज रास में ।
मनोरथ पूरे ना भये, ए तीसरा हुआ तिन सें ॥३०॥

न तुम राधिका रानी हो, न देवचन्द्र हो, बल्कि तुम परमधाम की श्यामा महारानी हो । मिथ्या माया की लीला देखने के लिए जब तुम बृज-रास में आए थे तब तुम्हारी इच्छा पूरी नही हुई थी । इस कारण से ये तीसरा नया ब्रह्माण्ड बना है । जिसको देखने के लिए ये तन तुम्हें मिला है । जिसका नाम देवचन्द्र है ।

अब सब साथ बुलाय के, आओ अपने धाम ।
धनी वे साथ कहां है, कह्या मैं भेजों तमाम ॥३१॥

अब परमधाम की सब आत्माओं को मेरी पहचान कराकर अपने घर परमधाम में ले आओ क्योंकि तुम उनके सुभान (सिरदार) हो । तब देवचन्द्र जी ने कहा कि धनी वो साथ कहां हैं ? मुझे उनका पता ठिकाना बताओ । तब श्री राजजी ने कहा तुम उनको नही पहचान सकोगे । जिस-जिस तन में मेरी परमधाम की आत्मा बैठी होगी । मैं उन सबको तुम्हारे पास स्वयं भेजूंगा ।

ए भागवत कागद तुम्हारा, सो तुम्हें खुले कलाम ।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम ॥३२॥

और श्री मद्भागवत के दसवें स्कन्ध में तुम्हारी ही लीला का वर्णन है । उनके असल भेदों को चौदे तवक की सारी दुनियां मिलकर भी खोल नही सकती क्योंकि अखण्ड रास लीला के समय इस ब्रह्माण्ड का लय हो चुका था । यह तीसरा ब्रह्माण्ड तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए बनाया गया है ।

अब तुमहें पूछना होय, सो पूछ लेओ तुम ।
फेर के ऐसी तरह से, द्रष्ट न आवें हम ॥३३॥

अब और जो कुछ तुम्हें पूछना है पूछ लो तुम्हें फिर इस प्रकार से कभी भी दर्शन तुमको नही होंगे।

Nijanand App

तब पूछा श्री देवचन्द्र जी नें, धनी कहां जाओंगे तुम ।
तुम्हारे अंदर आकार में, आये के बैठें हम ॥३४॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने पूछा धनी ! आप कहां जाओगे ? तब श्री राजजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारे ही आकार के अन्दर आकर हम विराजमान होंगे ।

तब मोको कहा पूछना, ए कहे तारतम बीज वचन ।
फेर के अदृष्ट भए, प्रफुल्लित हुआ मन ॥३५॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि अब आप मेरे अन्दर विराजमान होंगे तो क्या पूछना । श्री राजजी अपने निज स्वरूप और परमधाम की पहचान कराकर अदृश्य हो गए और देवचन्द्र जी के हृदय में आकर विराजमान हो गए । तब देवचन्द्र जी का मन अति प्रसन्न हो गया ।

तब ही नजर सत वस्त को, जाय के पहुंची धाम ।
ब्रज रास दोऊ अखण्ड, सुरत पहुंची तिस ठाम ॥३६॥

जैसे ही श्री राजजी महाराज का आवेश स्वरूप देवचन्द्र जी के हृदय मे विराजमान हुआ तो आवेश की शक्ति से उनकी आत्मा परमधाम को देखने लगी और फिर बृज और रास जो योगमाया में सबलिक में अखण्ड है, उनके भी दर्शन किए ।

श्री भागवत सास्त्र की, सब खुल गई नजर ।
विवेक सारी वस्त को, हो गई आतम फजर ॥३७॥

और श्री मद्भागवत के सब गूढ़ रहस्य इस आवेश शक्ति के द्वारा खुल गए और क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के सही स्वरूप और सही ठिकाने को आतम अनुभव करने लगी ।

उठके आये आसन, अपने गृह विश्राम ।
एह बात मैं किनको कहों, कौन माने इस ठाम ॥३८॥

उस दिन की भागवत कथा समाप्त होने के बाद कान्ह जी से स्पष्ट मना कर दिया कि हे भट्ट जी! कल से मेरी राह न देखना और प्रसन्नता के साथ वापिस घर आ गए ! अब वे अपने मन में सोचने लगे कि जो निराकार से आगे अखण्ड योगमाया में अखण्ड बृज रास की लीला है और उससे आगे अक्षर धाम है और उससे भी परे अक्षरातीत का परमधाम है । अब ये ज्ञान मैं किसको बताऊं कौन इस को मानेगा।

Nijanand App

एक ठौर कथा मिने, भाई गांगजी देत श्रवण ।
जब कथा से उठते, तिन आगे कहे वचन ॥३९॥

श्री राजजी की आवेश शक्ति से यह पता चला कि गांग जी भाई हमारी परमधाम की आत्मा है और वे भी उनके साथ श्याम जी के मंदिर में चर्चा सुना करते थे। जब वे चर्चा सुनकर वापिस आ रहे थे तो वही सड़क पर खड़े-२ ही उनको अलौकिक ज्ञान जो आज दिन तक कान जी भट्ट ने कभी भी नही सुनाया था, वह अखण्ड बृज रास और योगमाया के सब भेद समझाने लगे।

राह मिने खड़े रहे, चरचा ठाढ़े करे दोय ।
पानी भरने जाये पनिहारी, फेर आए खड़े देखे सोय ॥४०॥

इस चर्चा को सुनाने और सुनने में दोनों मग्न हो कर तीन-२ घन्टे तक खड़े रहते थे और उनको समय की सुध नही रहती थी। पानी भरने वाली पनिहारिन जब इतनी देर से खड़े देखती है तो समय की सुध उनको दिलाती है।

फेर दूसरी बेर जाये भरने, ए त्यों ही ठाढ़े कहे बचन ।
तब वे आपस में बातें करे, याके पांउ न थाके मन ॥४१॥

पानी भरने वाली पनिहारिन दो तीन बार पानी भरने आती जाती है तो क्या देखती है कि ये दोनों दीवानों की तरह खड़े-२ बातें कर रहे हैं न तो इन की बातें समाप्त होती है न ही इनके खड़े-२ पांव थकते हैं न ही बातों से मन थकता है।

ए चरचा के रस में, देह की न रखे खबर ।
तब से पनिहारी तीसरे, कहे वचन यों कर ॥४२॥

पर ये तो दोनों ही चर्चा के रस में इतने मग्न हो जाते हैं इनको देह और समय की सुध नहीं रहती तब पनिहारिन तीसरी बार जल लेकर आती है तो इन्हें टोकती है।

ए भाई तुम बैठ के, क्यों न बातें करो बनाये ।
कब के तुम ठाढ़े हो, हम तीन बेर फेर फेर आये ॥४३॥

पनिहारिन कहती है कि हे भाई साहब ? तुम बैठ कर क्यों नही अच्छी प्रकार से चर्चा कर लेते, तुम्हें कितना समय हो गया है तुम्हें सुध है मैं तीसरी बार पानी ले कर आई हूं।

Nijanand App

तब जाय सरीर की, सुध आवे याद ।
विचार कहे से दोऊ, याद करे बुनियाद ॥४४॥

पनिहारिन के टोकने पर तब कहीं उनको समय और शरीर की सुध आई । इस चर्चा के रस से दोनों अपने निजस्वरूप और निज घर परमधाम की याद करते हैं ।

यों नित करते रहे, गांग जी भाई ने देखे बचन ।
एह बात अगाध है, है कछु अलौकिक रोसन ॥४५॥

हर रोज इस प्रकार अलौकिक चर्चा सुनने के बाद गांग जी भाई को दृढ़ निश्चय हो गया कि जो ज्ञान श्री देवचन्द्र जी सुनाते हैं वह ज्ञान तो कभी कान्ह जी भट्ट ने नही सुनाया । निश्चय करके इनको अलौकिक शक्ति प्राप्त हुई है ।

तब गांग जी भाई ने पूछिया, हम तुम भागवत सुनते दोय ।
एह प्रस्न तुम कहां से ल्यावत, तुम मोहे बताओ सोय ॥४६॥

तब एक दिन गांग जी भाई ने देवचन्द्र जी से पूछा कि हम और तुम दोनों चौदह वर्ष से निष्ठाबंध हो कर श्याम जी के मंदिर में कान्ह जी भट्ट से श्री मद्भागवत की चर्चा सुनते रहे पर ऐसा अलौकिक अगाध ज्ञान तो उन्होंने कभी बताया नही था । ये तुम कहां से प्राप्त करके बताते हो ?

गांग जी भाई को जब देखिया, वस्त का पूरा पात्र ।
तब कछु चले बतावते, सतबोय रज मात्र ॥४७॥

जब गांग जी भाई को इस का पात्र देखा तो अब धीरे धीरे अक्षर और अक्षरातीत का ज्ञान देने लगे।

तिन खसबोय से भए, जोर जिज्ञासु जब ।
तब कछु आगे चले, बीतक बताई तब ॥४८॥

अक्षर और अक्षरातीत के भेद समझने से जिज्ञासा और भी जाग्रत हो गई फिर देवचन्द्र जी अपने असल स्वरूप की पहचान धीरे धीरे कहने लगे ।

फेर जनम से लेय के, आये नये नगर ।
तहाँ लो सारी बीतक, कह चले ता ऊपर ॥४९॥

फिर उमरकोट गांव से लेकर किस-किस प्रकार से खोज की और भोजनगर में क्या-क्या घटनायें घटी और कैसे नवतनपुरी में आये । सारी बात कह सुनाई ।

Nijanand App

फेर नये नगर में, ज्यों कर भया दीदार ।
सो सारी बताय दई, जो मेहर परवर दिगार ॥५०॥

तब नवतनपुरी में किस तरह नेष्ठाबंध भागवत सुनते समय जो घटनायें हुई और फिर चौदह वर्ष के पश्चात् साक्षात् अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिए और अन्दर आकर विराजमान हो गए । तो गांग जी भाई को दृढ़ निश्चय हो गया कि यही मेरे धाम के धनी हैं ।

प्रमाण : कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन ।
जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान ।
अपने घरों लिए बुलाये, सेवा करी बहुत चित्त लाए ।
सनेह सो सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी।

प्र० हि० प्रकरण न० ३७ चौ० ८०, ८१

तब बहुत राजी भए, आवें चर्चा को घर ।
तहां मण्डान होने लगा, बात पसर चली योंकर ॥५१॥

अब गांग जी भाई देवचन्द्र जी को अपना धाम का धनी मान कर अपने घर ले आये और सेवा करने लगे । अब गांग जी भाई के घर में चर्चा का मंडान होने लगा और वहीं से इस ज्ञान का प्रचार प्रसार शुरू हुआ ।

एक से सुनी दूसरे, तहां से मिला साथ ।
सोई आवे दीदार को, जाके धनिए पकड़े हाथ ॥५२॥

ऐसा अखंड, अगाध, अलौकिक ज्ञान एक से दूसरा जब सुनता है तो वही यकीन और ईमान लाता है, । जिसके अन्दर परमधाम की आत्मा होती है वह ही श्री राजजी महाराज की मेहर से ही चर्चा सुनने आता है ।

महामति कहे ए साथ जी, ए अपनी बुनियाद ।
अब तुम्हें आगे कहों, ताको करो याद ॥५३॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी । यहां से अपनी निजानन्द सम्प्रदाय के ज्ञान की बुनियाद प्रारम्भ हुई । अब इससे आगे क्या हुआ उसका प्रसंग कहता हूं उसको याद रखिए ।

(प्रकरण ६, चौपाई ३४१)

Nijanand App